हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(स्पर्श) (पाठ 3)(बिहारी – दोहे)
(कक्षा 10)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:

छाया भी कब छाया ढूँढने लगती है ।

उत्तर 1:

जेठ माह की प्रचंड गर्मी में जहाँ धरती पूरी तरह से जल रही होती है ऐसे में पेड़ों की छाया भी छाया ढूँढने लगती है ।

प्रश्न 2:

बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरौ हियौ , मेरे हिय की बात ' – स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर 2:

बिहारी की नायिका लोक लाज के भय से अपनी बात नायक को नहीं बता पाती है । वह कागज पर लिखकर अपना विरह प्रकट करना चाहती है परंतु विरह के कारण आँखों से निकलने वाले अश्रु और शरीर में होने वाले कंपन के कारण वह ऐसा नहीं कर पाती है । इसलिए वह कहती हैं कि तुम्हारा हृदय ही मेरी सारी पीड़ा तुम्हे बता देगा ।

प्रश्न 3:

सच्चे मन में राम बसते हैं – दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 3:

माला जपने ,माथे पर तिलक लगाने से कुछ नहीं होता यदि मन पवित्र नहीं क्योंकि मन के पवित्र होने पर ही है मन में राम का वास हो सकता है अर्थात मन पवित्र हो सकता है ।

प्रश्न 4:

गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं ?

उत्तर 4:

श्रीकृष्ण हर समय केवल बाँसुरी ही बजाते रहते हैं ऐसे में गोपियों को भी भूल चुके हैं उनका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी को छिपा लेती हैं ताकि उनका पूरा ध्यान गापियों पर ही रहे।

प्रश्न 5:

बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर 5:

बिहारी को लोक लाज व मर्यादा का अच्छा ज्ञान था ऐसे में भरे परिवार के बीच नायक नायिका का आपस में बात करना संभव न देखकर उन्होंने आँखों में ही दोनों के मध्य वार्तालाप कराने की युक्ति सोची जब उनके नायक और नायिका के नेत्र आपस में मिलते हैं तो नायक के आग्रह को नायिका आँखों के इशारे से मना कर देती है बार बार आग्रह करने पर वह खीज भी जाती है और नायक के आग्रह पर रीझ भी जाती है इस प्रकार दोनों का आपस में वार्तालाप भी हो जाता है और वहाँ उपस्थित लोंगों को पता भी नहीं चलता ।

भाव स्पष्ट कीजिए:

1:

मनौ नीलमनि सैल पर आतपु पर्‌यो प्रभात ।

उत्तर 1:

भगवान श्रीकृष्ण पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं और उनका रंग साँवला है जब गोरी राधा की परछाँईं उनपर पड़ती है अर्थात् वे उनके समीप आती हैं तो ऐसा लगती है कि मानो नीलमणि पर्वत पर प्रभात की पहली किरण पड़ी हो सवेरा हो गया हो । दोहा छंद और अनुप्रास अलंकार का अच्छा प्रयोग किया गया है ।

2:

जगतु तपोवन सो कियौ दीरघ–दाघ निदाघ ।

उत्तर 2:

धरती पर पड़ती भयंकर गर्मी के कारण सभी पशु पक्षी अपनी जान बचाने के लिए छाया ढूंढकर एक स्थान पर आकर बैठ गए हैं आपस में भयंकर शत्रु होने पर भी वे एक दूसरे पर प्रहार नहीं कर रहे हैं जिसे देखकर ऐसा लगता है कि सारा जग ही तपोवन बन गया हो ।

3:

जपमाला, छापैं तिलक सरै न एकौ कामु।
मन–काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु ।

उत्तर 3:

कवि कहते हैं कि माला जपने माथे पर तिलक लगाने से कुछ नहीं होता क्योंकि कच्चा मन सांसारिक मोह माया में फंसा हुआ है और व्यर्थ में ही इधर उधर भटकता रहता है कोई काम भी ठीक से नहीं होता है । यदि मन सच्चा हो तो स्वयं ही उसमें राम का वास हो जाता है